SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-1, जनवरी - मार्च 2025 E-ISSN : 2584-2900

"श्री अरविंद का ऐतिहासिक दृष्टिकोण: भारतीय राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक पुनर्जागरण"

आलोक कुमार पाण्डेय

सह-प्राध्यापक (इतिहास)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

श्री अरविंद भारतीय इतिहास, संस्कृति और राष्ट्रवाद के एक प्रखर चिंतक थे, जिन्होंने भारतीय पुनर्जागरण और स्वतंत्रता आंदोलन को आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। उनका ऐतिहासिक दृष्टिकोण केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि वे भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण और आध्यात्मिक उत्थान को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की आधारशिला मानते थे। श्री अरविंद के अनुसार, भारत की सभ्यता प्राचीनतम और अत्यंत समृद्ध रही है, जिसका आधार वेद, उपनिषद, योग और सनातन धर्म की परंपराएँ हैं। वे मानते थे कि भारत ने केवल भौतिक समृद्धि ही नहीं, बल्कि विश्व को एक गहन आध्यात्मिक दर्शन भी प्रदान किया है। उनका मानना था कि भारतीय इतिहास केवल विदेशी आक्रमणों और राजनीतिक परिवर्तनों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक निरंतर चलने वाली आध्यात्मिक यात्रा है, जिसे समझे बिना भारत की आत्मा को नहीं जाना जा सकता। उन्होंने राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक संकल्पना नहीं माना, बल्कि उसे एक जीवंत शक्ति के रूप में देखा, जो भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना से जुड़ी हुई है। उनके अनुसार सच्चा राष्ट्रवाद भारत की आत्मा की पुनः खोज और भारतीय संस्कृति के गौरव की पुनर्स्थापना में निहित है। वे पश्चिमी भौतिकवाद के अंधानुकरण के विरोधी थे और भारतीय समाज के आध्यात्मिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने पर बल देते थे। श्री अरविंद के राष्ट्रवाद की अवधारणा केवल स्वतंत्रता आंदोलन तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे मानते थे कि भारत का उत्थान समूची मानवता के कल्याण के लिए आवश्यक है। उनके विचारों का प्रभाव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी चरण से लेकर स्वतंत्र भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण तक देखा जा सकता है।

कुंजीभूत शब्द

भारतीय पुनर्जागरण, आध्यात्मिकता, देदीप्यमान व्यक्तित्व, तत्वशास्त्री, संस्कृति, परिमार्जित, परिशुद्धि।

शोध विस्तार

श्री अरविंद भारती पुनर्जागरण और भारतीय राष्ट्रवाद की एक महान विभूति थे। नैतिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक उपलब्धियों ने भारत के शिक्षित समाज पर गहरा प्रभाव डाला है। उनके महाग्रंथ 'द लाइफ डिवाइन' के प्रकाशन के समय से संसार के प्रमुख विद्वानों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ और उनका महाकाव्य 'सावित्री' आध्यात्मिक काव्य के क्षेत्र में एक नये युग का प्रवर्तक माना जाता है। नि:संदेह वे आधुनिक भारतीय विचारकों में सबसे अधिक सुशिक्षितों में से एक थे। टैगोर ने, जिन पर श्री अरविंद के देदीप्यमान व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पड़ा था, कहा है कि उनके द्वारा भारत विश्व को अपना संदेश व्यक्त करेगा। रोमैं रोलां श्री अरविंद को एशिया की प्रतिभा तथा यूरोप की प्रतिभा का सर्वोत्कृष्ट समन्वय मानते थे। सचमुच श्री अरविंद की प्रतिभा बहुमुखी। थी वे कवि तत्वशास्त्री, दृष्टा, देशभक्त, मानवता के प्रेमी तथा राजनीतिक-सामाजिक विचारक थे। उनकी रचनाओं में हमें भारत की नवीन व उदीयमान आत्मा का घनीभूत सार देखने को मिलता है और मानव-जाति के लिए उनमें अध्यात्मिक संदेश निहित है।[1]

श्री अरविंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

श्री अरविंद का जन्म 15 अगस्त 1872 को कोलकाता के घोष परिवार में हुआ था। उनके पिता डॉक्टर कृष्णधन घोष मेडिकल अफसर थे। श्री अरविंद घोष को 7 वर्ष की आयु में ही अंग्रेज परिवार की देखरेख में इंग्लैंड पढ़ने के लिए भेज दिया गया। वे वहां 21 वर्ष की अवस्था तक रहे। वहां उन्होंने यूनानी तथा लैटिन साहित्य का गहन अध्ययन किया। इसके बाद सन 1893 में वे भारत वापस आ गए। यद्यपि वे ब्रिटेन में रहकर एक यूरोपीय युवक बन चुके थे तथापि वे ब्रिटेन में स्थापित इंडिया मजलिस तथा लोटस एंड डैगर आदि संस्थाओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। मैजिनी तथा गैरीबाल्डी के जीवन चरित्रों से भी वह बहुत प्रभावित हुए। ब्रिटेन में

रहते हुए ही उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आलोचना करते हुए कुछ लेख प्रकाशित किये जिसके कारण अंग्रेज शासको का ध्यान उनकी तरफ आकर्षित हुआ। भारत लौट आने के कुछ ही दिनों बाद पश्चात सभ्यता के प्रति उनका मोह टूट गया और आर्य सभ्यता व संस्कृति के प्रति उनका आकर्षण दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। यही कारण था कि जब वह बड़ौदा में प्रोफेसर थे उसे समय उन्होंने उपनिषदों तथा गीता का गंभीर और गहन अध्ययन मनन किया और इस निर्णय पर आए कि इन ग्रंथो में गंभीर व गुढ़ आध्यात्मिक ज्ञान के भंडार भरे पड़े हैं। साथ ही स्वामी रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानंद के वेदान्तिक समन्वय का भी उन पर विशेष प्रभाव पड़ा।[2]

श्री अरविंद का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान

सन 1905 से 1910 तक बंगाल के राष्ट्रवादी आंदोलन में श्री अरविंद ने निरंतर सक्रिय भाग लिया और राष्ट्रीय आंदोलन के एक नेता के रूप में उभरकर सामने आए। उस समय उनके महान त्याग और राष्ट्रीय विचारधारा से लोग अत्यंत प्रभावित हुए। इस संबंध में वेलेंटाइन शिरोल ने लिखा है कि सक्रिय आत्मत्याग के इस आदर्श के संबंध में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती है। उनका विचार था कि ब्रिटिश शासन तथा पश्चिमी सभ्यता दोनों ही हिंदुत्व के जीवन के लिए खतरनाक है। यह आरोप लगाना उचित नहीं है कि श्री अरविंद राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हिंसा तथा हत्या को उचित कार्य मानते थे क्योंकि उन पर कई बार मुकदमा चलाया जा चुका है और एक बार तो 'मानकटोला बमकांड' में उन पर वास्तविक राजनीतिक अपराध में सम्मिलित होने के लिए मुकदमा चलाया गया परंतु कानून ने उन्हें हर बार निरपराध व निर्दोष ही पाया। राजनीतिक नेता तथा लेखक के रूप में श्री अरविंद प्राचीन वेदांत तथा आधुनिक यूरोपीय राजनीतिक दर्शन का समन्वय करना चाहते थे। वास्तव में वे एक पराधीन राष्ट्र सांस्कृतिक जीवन के पुनः निर्माण की एक ठोस -के राजनीतिक तथा सामाजिक (भारत) योजना प्रस्तुत करना चाहते थे जो की मूलतः भारतीय हो।[3]

सन 1910 में श्री अरविंद ने अचानक ही स्वयं को राष्ट्रीय आंदोलन से पृथक कर लिया क्योंकि उन्हें यह अनुभव होने लगा था कि उन्होंने एक बड़े कार्य के लिए इस दुनिया में जन्म लिया है। अलीपुर जेल के एकांत निवास में उन्हें रहस्यात्मक, अलौकिक दृश्य व शक्तियों के

दर्शन हुए थे, इस बात को उन्होंने स्वीकार किया एवं उसी अलौकिक शक्ति की खोज मे वे पांडिचेरी चले गए एवं एक आश्रम की स्थापना की और वहीं पर अपना संपूर्ण जीवन योग साधना में लगा दिया।[4]

श्री अरविंद के संस्कृति संबंधी विचार

शाब्दिक अर्थ में संस्कृति शब्द संस्कार का रूपांतरण है। किसी भी हिंदू को अपने जीवन को परिमार्जित करने के लिए अनेक प्रकार के संस्कार करने पड़ते हैं, तब कहीं जाकर वह 'संस्कृत', परिमार्जित या cultured कहा जाता है।[4] इस रूप में हम कह सकते हैं कि संस्कृति व्यक्ति के जीवन को परिशुद्ध करने का एक साधन है। श्री अरविंद का कहना था कि यह परिशुद्धि केवल शरीर की ही नहीं अपितु मन, बुद्धि और विवेक सब-कुछ की होनी चाहिए। तब कहीं मानव अपने जीवन को राष्ट्र के सेवार्थ नियोजित कर सकता है और उस आत्मा के माध्यम से परमात्मा के साथ भी सम्पर्क स्थापित कर सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री अरविंद के विश्लेषण में उसे वेदांती दर्शन का ही प्राधान्य है जिसमें परम सत्य, परम ज्ञान, परम शुभ, और परम आनंद को ही सर्वाधिक महत्व दिया गया है।

श्री अरविंद का राष्ट्रवाद

श्री अरविंद राष्ट्रवाद को ईश्वरी दिन व आदेश समझते थे। उनके शब्दों में राष्ट्रीयता क्या है? यह केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है ।राष्ट्रवाद तो एक सनातन धर्म है जो हमें ईश्वर से प्राप्त हुआ है। यह एक विश्वास है जिसे लेकर आपको जीवित रहना है। राष्ट्रवाद अमर है वह मर नहीं सकता क्योंकि वह कोई मानवीय वस्तु नहीं है वह तो ईश्वर है। ईश्वर को मारा नहीं जा सकता। ईश्वर को जेल भी नहीं डाला जा सकता। राष्ट्रवादी बनने के लिए राष्ट्रीयता के इस धर्म को स्वीकार करने के लिए हमें धार्मिक भावना का पूर्ण पालन करना होगा। हमें स्मरण रखना चाहिए कि हम निमित्त मात्र हैं। भगवान के साधन मात्र है। उन्होंने अन्यंत्र इस बात को दोहराते हुए लिखा था "हम तो केवल मातृभूमि के दिव्य रूप को पूज्य मानते हैं, किसी प्रकार के वर्तमान राजनीतिक लक्ष्य को नहीं। एक अन्य ग्रंथ में उन्होंने लिखा था "भारत माता बेड़ियों में

जकड़ी हुई है। हमारा एकमात्र लक्ष्य उनको स्वतंत्र कराना है। इस संघर्ष में माता के हित के लिए हर संतान को अपने सर्वस्व का बलिदान करने के लिए तैयार रहना होगा, क्योंकि उसने यह सर्वस्व उसी माता से ही प्राप्त किया है। राष्ट्रीय मुक्ति का प्रयत्न एक परम यज्ञ है। इस यज्ञ का सुफल स्वतंत्रता है जिसे हम देवी भारतमाता को अर्पित करेंगे। सप्तजिह्वा यज्ञाग्नि की ज्वालाओं में हमको अपनी और अपने सर्वस्व की आहुति देनी होगी। अपने रुधिर और प्रियजनों के सुख की भी आहुति देकर उसे अग्नि को प्रज्वलित रखना होगा, क्योंकि मातृभूमि वह देवी है जो अपूर्ण और विकलांग बलि से संतुष्ट नहीं होती है और अपूर्ण मन से बलिदान करने वाले को देवता कभी मुक्ति का वरदान नहीं देते हैं।[5]

शोध निष्कर्ष

श्री अरविंद का ऐतिहासिक दृष्टिकोण भारतीय राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण विमर्श प्रस्तुत करता है। वे न केवल एक आध्यात्मिक विचारक थे, बल्कि एक क्रांतिकारी नेता भी थे, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रवादी चेतना को गहराई से प्रभावित किया। उनके विचारों में भारतीय संस्कृति, धर्म, योग, वेदांत और पश्चिमी आधुनिकता का समन्वय दिखाई देता है। श्री अरविंद का राष्ट्रवाद मात्र राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि यह भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण से भी जुड़ा हुआ था। उनका मानना था कि भारत की पुनरुत्थान यात्रा तभी सफल होगी जब हम अपनी प्राचीन आध्यात्मिक विरासत को आत्मसात करते हुए आधुनिकता के साथ संतुलन बनाएंगे। उन्होंने भारतीय समाज में आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक गौरव, और आध्यात्मिक उत्थान को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक बताया। उनका योगदान भारतीय राष्ट्रवाद की विचारधारा को एक गहरी दार्शनिक नींव देने में रहा। वे स्वतंत्रता संग्राम को केवल राजनीतिक आंदोलन नहीं, बल्कि एक दिव्य मिशन मानते थे, जिसमें भारत को एक विश्वगुरु के रूप में पुनर्स्थापित करने की आकांक्षा थी। उनकी शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्र में मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकती हैं।

अतः, श्री अरविंद के विचार भारतीय राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक पुनर्जागरण को एक उच्च आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जो केवल भौतिक स्वतंत्रता तक सीमित न रहकर एक व्यापक राष्ट्रीय पुनर्जागरण की दिशा में अग्रसर होते हैं। उनका दर्शन भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच एक सेतु का कार्य करता है, जो राष्ट्र के आत्मबोध, आत्मनिर्भरता और विश्व कल्याण के व्यापक लक्ष्य की ओर प्रेरित करता है।

संदर्भ

1. डॉ. मुकर्जी रवीन्द्र नाथ, सामाजिक विचारधारा, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 511
2. पाठक पी डी, उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षा के आधार एवं विकास, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ संख्या 1373.
3. मुकर्जी रवीन्द्र नाथ, सामाजिक विचारधारा, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 512
4. मदन पूनम, भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास तथा समस्याएं, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ संख्या 143
5. डॉ. पाण्डेय रामशकल, उदयीमान भारती समाज में शिक्षक, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ संख्या 506
6. शरण गिरिराज, मैं अरविंद बोल रहा हूं, प्रभात प्रकाशन, प्रश्न संख्या 234